विषय की गहरी समझ और बच्चों के साथ मानवीय रिश्ते से बनते हैं अच्छे शिक्षक

शिक्षक सुभाष यादव से सिद्धार्थ कुमार जैन की बातचीत



सिद्धार्थ जैन : साथियों, आज हमारे साथ शिक्षक सुभाष यादव हैं, जो मध्य प्रदेश के धार ज़िले की शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला कागदीपुरा में 2012 से पढ़ा रहे हैं। आप अपने इलाक़े में लम्बे समय से आदिवासी बच्चों के बीच बेहतर काम करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारा मक़सद ऐसे शिक्षकों के अनुभवों व विचारों को सुनना, समझना और साझा करना है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य शिक्षक साथी भी उनके प्रयासों से अवगत हो सकें।

सुभाषजी, बातचीत शुरू करते हैं, अपने बारे में कुछ बताएँ।

सुभाष यादव : मैं नालछा नाम के एक छोटे-से कस्बे का निवासी हूँ। मेरे पापा शिक्षक थे। उनका ट्रान्सफ़र नालछा से क़रीब अस्सी किलोमीटर दूर धरमपुरी विकासखण्ड के गाँव कोठड़ा हो गया। मैं बचपन में थोड़ा शरारती था इसलिए मम्मी ने मुझे पापा के पास कोठड़ा भेज दिया। वहाँ मैं पापा के स्कूल में दाख़िल हो गया और रोज़ाना चार किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाता था। पापा बहुत मिलनसार थे। कोठड़ा एक आदिवासी बहुल गाँव था तो वह लोगों से अकसर मिलते-जुलते थे। उन्हीं दिनों मेरे मन में शिक्षक बनने का विचार आया। मुझे लगा कि शिक्षक कितनी अच्छी बातें करते हैं, लोग उनकी कितनी इज़्ज़त करते हैं! मैं वहाँ क़रीब एक साल रहा और जब चौथी कक्षा में आया तो मम्मी का स्वास्थ्य ख़राब रहने लगा। हम वापस अपने गाँव आ गए। दुर्भाग्य से एक वर्ष के अन्दर पापा की मृत्यु हो गई। पढ़ने की बहुत इच्छा थी। मज़दूरी करते हुए ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ाई कर ली। बग़ैर कोचिंग के हायर सेकेंडरी बोर्ड इम्तेहान में फ़र्स्ट क्लास से पास हुआ। उस दौरान एक बार एक शिक्षक ने 'शहीद' शब्द का प्रयोग किया और उसकी व्याख्या में कहा कि जो देश के लिए काम करते-करते काल के गाल में समा जाते हैं, उन्हें 'शहीद' कहा जाता है। यह 'शहीद' शब्द मेरे मन में बैठ गया। मुझे लगा कि

ऐसा ही कोई काम करना चाहिए अपने देश के लिए। इसके बाद शिक्षक बनने की जो बात थी उसकी जगह पर सेना में भर्ती होने का भाव मेरे मन में आ गया। फिर मैं बीएसएफ़ में भर्ती हो गया। पर वहाँ जो माहौल था, वह मेरे घर के माहौल से बहुत ही अलग था। फिर शिक्षक के पद के लिए आवेदन किया तो मेरी भर्ती हो गई और मैं एक शिक्षक के रूप में कार्य करने लगा।

सिद्धार्थ जैन : सुभाषजी, जैसा कि आपने कहा आपकी भर्ती सेना में हो गई थी और फिर आप शिक्षक बन गए। तो आपने शिक्षण का कार्य क्यों चुना? इस बारे में थोड़ा बताएँ।

सुभाष यादव : शुरू में तो शिक्षक बनने का ही विचार था, क्योंकि मैं अपने पिता की तरह एक शिक्षक ही बनना चाहता था। शिक्षक की बड़ी इज़्ज़त होती है, बच्चों को पढ़ाने का मौक़ा मिलता है, जब उनके घर जाते हैं तो वहाँ भी बड़ा मान-सम्मान मिलता है। हमने सोचा क्यों न शिक्षक का कार्य ही अपनाया जाए और फिर मैं इस पेशे में आ गया।



सिद्धार्थ जैन : पिछले बीस साल से आप शिक्षकीय पेश में हैं। कैसा महसूस करते हैं एक शिक्षक के रूप में?

सुभाष यादव : मैं रात में सोता हूँ, तब भी मुझे स्कूल और बच्चों के ख़्याल आते हैं। कहीं जाता हूँ, दोस्तों के साथ भी रहता हूँ तो वही ख़्याल आता है कि अपने कार्य में क्या और करना है। जैसे, कोरोना काल में मैंने एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाया, जिसमें बच्चों के माता-पिता को शामिल किया। बच्चों को यह बहुत पसन्द आया। मैंने भी कई नई बातें सीखीं। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि हम अपने-अपने घरों में क़ैद रहते हुए भी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, बच्चों की पढ़ाई की फ़िक्र कर रहे हैं। माता-पिता से मिलने वाला प्रेम बहुत अभिभूत करता है। मुझे बच्चों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है। एक नई शक्ति, नया सुकून मिलता है।

सिद्धार्थ जैन : आपकी नज़र में एक बेहतर शिक्षक कैसा होता है, उसे आप किस रूप में देखते हैं?

सुभाष यादव : एक बेहतर शिक्षक का आत्मविश्वास बहुत मज़बूत होना चाहिए। जैसे, कोई शिक्षक यदि किसी विषय को पच्चीस बच्चों को पढ़ा रहा है तो उसमें यह विश्वास होना चाहिए कि वह बच्चों को यह अवधारणा पढ़ाने और समझाने का भरपूर प्रयत्न करेगा। एक बेहतर शिक्षक को विषय और इसे पढ़ाने की अच्छी समझ होनी चाहिए। उसका बच्चों के प्रति स्नेह और मानवीयता का भाव होना चाहिए। उसका चरित्र और कर्तव्यनिष्ठा का भाव बहुत गहरा होना चाहिए। लोग कहते हैं कि आज के समाज में शिक्षक का आदर नहीं होता, पर मेरा तो अनुभव है कि आज भी लोग शिक्षक का सम्मान करते हैं। अधिकतर अभिभावक छोटे किसान हैं और जब मैं स्कूल से लौटता हूँ, मुझे अपने घरों में पकाया हुआ भोजन तो कभी भुट्टे, सब्ज़ी, वग़ैरह देते हैं। मैं कहता हूँ कि इसका मूल्य देकर ही लूँगा। वे मन में इतनी गहरी भावना और स्नेह रखते हैं कि उनका प्रेम भीतर तक छू जाता है, और अभिभूत कर देता है। शिक्षक के पास समय ही होता है और उसे समय दान करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

सिद्धार्थ जैन : आप अपनी कक्षा के भीतर किस तरह का वातावरण निर्मित करते हैं, जिससे पढ़ाने में मदद मिलती है?

सुभाष यादव : मैंने कक्षा में पाँच कोने बनाए हैं। एक गणित का कोना है, एक भाषा का है, जिसमें अँग्रेज़ी और हिन्दी दोनों शामिल हैं। मैं किसी भाषा को, वर्ण को एक प्रकार से नहीं, अलग-अलग प्रकार से पढ़ाता हूँ। जैसे, यह नहीं कि वर्ण मैंने बोर्ड पर ही लिख दिए। बच्चों को मिट्टी पसन्द है, रेत, बोर्ड पसन्द है, तो मैं वर्णमाला सिखाने के लिए, हिन्दी की हो या अँग्रेज़ी की, सभी माध्यमों का उपयोग करता हूँ।

बच्चों को मिट्टी अच्छी लगती है, रेत अच्छी लगती है। इसलिए जो बच्चों को अच्छा लगता है, उस तरह से पढ़ाने की कोशिश करता हूँ। बच्चों को कट आउट से खेलना अच्छा लगता है। मिट्टी भी है, रेत है, कट आउट हैं, कार्ड हैं, उनके मॉडल हैं, ब्लैकबोर्ड भी हैं। भाषा के बाद मैं गणित को लेता हूँ। बच्चों को गणित में मज़ा तब आता है जब उन्हें समझ में आए, और मैं उनको समझाने के लिए कई उपाय करता हूँ। सरल से कठिन की तरफ़ जाता हूँ और स्वनिर्मित शिक्षण सामग्री काम में लाता हूँ। विषय के लिए ज़रूरी है कि बच्चों को समझा जाए। दूसरे शिक्षक भी मेहनत करते हैं, और पूछते हैं कि मैंने ऐसा क्या किया कि बच्चा समझ गया। मैं बताता हूँ कि मैं विषय के साथ बच्चों को भी समझता हूँ। बच्चों की समझ के स्तर पर जाना पड़ता है। मैं तो बच्चों के बीच बैठकर उन्हें समझाने का प्रयास करता हूँ। कुछ दिन पहले ही मुझे बच्चों को एएम और पीएम का अर्थ समझाने में पूरा दिन लग गया। लेकिन मैंने देखा कि शाम तक वे समझ गए। अब वे अपने बोलचाल में उसका उपयोग भी करने लगे हैं। मुझे बहुत सन्तोष हुआ। तो मैं हर को चीज़ को मॉडल के रूप में समझाने की कोशिश करता हूँ।



एक है 'मेरा अपना कोना', और उस कोने में बच्चे जो चाहें रख सकते हैं। वो चाहें तो चित्र रख दें, मिट्टी के खिलौने बनाकर रख दें। पहली और दूसरी कक्षा में बच्चों के लिए खिलौने ही रखता हूँ कि बच्चा बस खेले। जो चाहे वह खेले। कविता बोले। एक बार साढ़े पाँच या छह साल की एक बच्ची के घर से उसे कोई बुलाने आया क्योंकि घर में कोई पूजन कार्यक्रम था। पर बच्ची ने मना कर दिया क्योंकि उसे स्कूल में काफ़ी मज़ा आ रहा था। बच्चे क्लास में कुछ तोड़ते-फोड़ते हैं तो मैं कभी भी मना नहीं करता, बस बाद में इस बारे में उनसे बातचीत का प्रयास ज़रूर करता हूँ।

सिद्धार्थ जैन : बहुत अच्छी बात कही आपने। बच्चों के साथ रिश्ते जितने प्रगाढ़ होंगे, शिक्षा के काम को आगे ले जाने में हमें उतनी ही आसानी होगी। मैं जानना चाहता हूँ कि एक शिक्षक के रूप में आप शिक्षण कार्य की तैयारी किस तरह से करते हैं? शिक्षण प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए सभी काम किस तरह कर पाते हैं? कब समय मिल पाता है आपको?

सुभाष यादव : मैं सारे काम घर पर ही करता हूँ। स्कूल से पन्द्रह मिनट में घर पहुँचकर चाय पीता हूँ, और कम्प्यूटर पर बैठ जाता हूँ। अगले दिन की सारी योजना बनता हूँ। फिर हर योजना के प्रिंटआउट लेता हूँ, और उन्हें एक जगह चिपकाता हूँ। मैंने देखा कि जब हम कोई काम शुरू करते हैं तो उसके बारे में नए-नए विचार अपने-आप आने लगते हैं। ये अकसर आकस्मिक और आश्चर्यजनक

रूप से आते हैं। अब तो मैंने पचास इंच की एक टीवी ले ली है। घर पर किया हुआ काम एक पेन ड्राइव में ले जाता हूँ, फिर अपनी स्मार्ट क्लास में टीवी के माध्यम से और छोटे बच्चों को खिलौनों के माध्यम से समझाता हूँ।

सिद्धार्थ जैन : ये सारे संसाधन आप कैसे जुटा पाए?

सुभाष यादव : कुछ जन सहयोग भी लिया हमने, और हमारे कुछ अधिकारियों का भी सहयोग मिला। अभी हाल ही में एक बड़े अधिकारी आए। यदि कोई काम करता है तो उसके मन में डर नहीं रहता। उनके आते ही मैं उनसे बातें करने लगा। उन्हें भी आश्चर्य हुआ। मैंने उन्हें एक अबैकस दिखाया जो कबाड़ से बनाया था। उस अबैकस की मदद से बच्चे बड़ी संख्या भी आसानी से लिख लेते हैं।

कभी बच्चे ही शिक्षक भी बन जाते हैं। शिक्षण कार्य सुगमता से चले, इसके लिए पाँच-पाँच बच्चों के समूह बनाए हैं। उन पाँच बच्चों में एक लीडर रहता है जो बाक़ी बच्चों को पढ़ाता है। मैं लीडर को समझाता हूँ और वे बाक़ी बच्चों को समझाते हैं, उन्हीं की भाषा में। हमारे यहाँ जो भाषा चलती है, उसमें गुजराती का थोड़ा मिश्रण रहता है। वे दो को 'बे', तीन को 'ताण' और चार को 'सार' कहते हैं। मुझे इस भाषा को इस्तेमाल करने में थोड़ी दिक़्क़त ज़रूर आती है। मैं ये चीज़ें उन बच्चों से समझता हूँ कि तुम्हारी भाषा में इसको क्या कहते हैं, वग़ैरह-वग़ैरह। बड़े बच्चों से सीखकर मैं बाक़ी बच्चों तक पहुँचता हूँ। बच्चों को समझाने के लिए मैं बच्चों का सहयोग ही ज़्यादा लेता हूँ।

सिद्धार्थ जैन : यह आपने बताया कि आप ग्रामीण और आदिवासी बच्चों की भाषा सीखकर उसके ज़रिए उन तक पहुँचते हैं। और क्या करते हैं कि उनकी भाषा का उपयोग शिक्षा में किसी हद तक हो पाए?

सुभाष यादव : हमारी अभिभावकों के साथ बैठक होती है, और मैं अभिभावकों के साथ बच्चों की आदतों वग़ैरह के बारे में बातें करता हूँ। वे अनुपस्थित क्यों होते हैं, यह पूछता हूँ। जो बच्चे हमारे यहाँ से निकलकर कॉलेज पहुँच गए, उनका भी सहयोग लेता हूँ। परिवार के लोगों से स्थानीय भाषा में बात करने से ज़्यादा निकटता महसूस होती है और वे भी स्कूल से अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं।

सिद्धार्थ जैन : हमारे ग्रामीण, आदिवासी अंचलों की अपनी एक अलग भाषा है और पाठ्यपुस्तक की अलग। आप दोनों के बीच तालमेल कैसे बैठा पाते हैं?

सुभाष यादव : अकसर कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो पाठ्यपुस्तक में होते हैं, पर बच्चों की भाषा में नहीं। ऐसे में उनके पर्याय ढूँढ़ता हूँ, फिर भी न समझ आएँ तो उनके चित्र बनाता हूँ और उनके माध्यम से समझाने की कोशिश करता हूँ।

सिद्धार्थ जैन : इसके एक या दो उदाहरण दे सकते हैं?

सुभाष यादव : जैसे 'रोटी' शब्द उनकी भाषा में नहीं है। इसके लिए उनके पास 'रोटला' शब्द है। फिर उनको बताते हैं कि 'रोटला' के लिए आम भाषा में 'रोटी' शब्द है। ऐसे बहुत सारे शब्द होते हैं जो मुझे भी अटपटे लगते हैं। ऐसे में, मैं बड़े बच्चों का सहयोग लेता हूँ। मैंने देखा है कि यदि बच्चा आपकी बात को समझता है, तो आप पर भरोसा भी करने लगता है। यदि वह प्रश्न कर रहा है या आपके प्रश्नों का उत्तर दे रहा है, इसका मतलब ही यह है कि वह आपकी बात समझ रहा है।

बच्चों को प्रश्न करने की आदत होनी चाहिए। यदि वह प्रश्न उठा रहा है तो इसका अर्थ है कि वह आपसे जुड़ा हुआ है और आपकी बात को ग्रहण कर रहा है। यदि सवाल नहीं करता तो मैं बड़े बच्चे को बुलाता हूँ, जो एक दुभाषिए का काम करते हुए मेरी बात उस बच्चे तक पहुँचाता है। इस प्रक्रिया में, मैं ख़ुद उस भाषा की बारीक़ियाँ समझने लगता हूँ।

सिद्धार्थ जैन : सुभाषजी, आपके स्कूल में 132 बच्चे हो गए हैं और माध्यमिक स्कूल भी उसी परिसर में है। आप एक प्रधानाध्यपक भी हैं। आप किस तरह ये सभी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं?

सुभाष यादव : मैंने समुदाय का सहयोग लिया है। हमारे स्कूलों में शिक्षक कम और बच्चे ज़्यादा होते हैं। एक क्लास में हमारे यहाँ पच्चीस बच्चे हैं। मैंने पहले वहाँ ग्रुप लीडर बनाए। शिक्षक बच्चों को अलग-अलग ग्रेड दे देते हैं– 'ए', 'बी', 'सी', 'डी' और 'ई'। अब ये बच्चों के ग्रेड नहीं हैं, टीचर्स ने इन्हें अपनी सुविधा से बना लिया है, क्योंकि वे जिन बच्चों तक नहीं पहुँच पाए उन्हें 'डी' और 'ई' ग्रेड दे दिए। मैं देखता हूँ कि ये 'डी' और 'ई' वाले बच्चे ही कभी-कभी 'ए', 'बी' और 'सी' वाले बच्चों से काफ़ी आगे निकल जाते हैं। ये तो कक्षा के भीतर के काम हुए, पर अब बाहर के भी काम हैं, जैसे– बग़ीचे तैयार करवाना, आदि। हमारा गाँव इतना ईमानदार है कि अगर कोई सामान बाहर भी रखा हुआ है, तो वह कहीं नहीं जाएगा। गाँव वाले हमारे साथ हर प्रकार का सहयोग करते हैं। हमारा गाँव बहुत ज़्यादा ग़रीब है, पर वहाँ के मज़दूर भी हमारा सहयोग करते हैं। कोई कार्यक्रम होता है तो वे पूरा सहयोग करते हुए ख़ुद से आकर काम करते हैं।

सिद्धार्थ जैन : हर बच्चा सीख पा रहा है, इसको आप कैसे सुनिश्चित करते हैं? हर बच्चा सीखे यह एक बड़ी चुनौती है। इसके साथ आकलन और मूल्यांकन का प्रश्न आता है। इस दिशा में आप कैसे कार्य करते हैं?

सुभाष यादव : वैसे तो बीच-बीच में पढ़ाई के दौरान मैं बच्चों से सवाल पूछता रहता हूँ। बेसलाइन टेस्ट से बच्चे की सीख का आकलन हो पाता है। यदि किसी बच्चे को समझने में दिक़्क़त होती है तो हम उसे अलग-अलग तरीक़ों से समझाने की कोशिश करते हैं।

सिद्धार्थ जैन : आप लम्बे समय से आदिवासी इलाक़ों में शिक्षा की स्थिति से वाक़िफ़ हैं। समुदाय में बालिकाओं की शिक्षा को आप कैसे देखते हैं?

सुभाष यादव : कागदीपुरा के पहले मैं आले गाँव में था। वहाँ के 55 बच्चे जवाहर नवोदय विद्यालय में चयनित हुए थे। कागदीपुरा में जब मैंने इस संस्था को ज्वाइन किया, इसे एक चुनौती के रूप में लिया। आले गाँव में एक मोहल्ला था, वहाँ की लड़कियाँ हमारे स्कूल में नहीं आती थीं। हमने सोचा ऐसा क्या करना चाहिए कि लड़कियाँ हमारे स्कूल में आएँ? मैं सहायक आयुक्त (ट्राइबल) के पास गया और उनसे अनुरोध किया कि मैं एक बालिका मेला आयोजित करना चाहता हूँ और ब्लॉक में जितने भी प्राइमरी स्कूल हैं, वहाँ से पाँच-पाँच बालिकाएँ शिक्षकों के साथ इस मेले में आएँ। उस मेले में मैंने भोजन आदि की भी व्यवस्था की थी। बच्चे इतने प्रसन्न हुए कि कई बालिकाओं ने वहीं फ़ैसला किया कि वे स्कूल में दाख़िला लेंगी। मैंने समझा कि जब तक हम किसी काम में बच्चों को शामिल नहीं करेंगे तब तक सफलता नहीं मिलेगी। किसी भी तरह के काम में समुदाय को जोड़ना ज़रूरी है। हमारे कागदीपुरा में एक भी बच्चा ऐसा नहीं जो स्कूल नहीं आ रहा हो।



कागदीपुरा में हम कुछ मेले आयोजित करते हैं। यहाँ बालकों और बालिकाओं की संख्या बराबर है। सौ फ़ीसदी बालिकाएँ हमारे विद्यालय में पढ़ रही हैं। हम उनपर इतना ध्यान देते हैं कि कभी-कभी तो बालकों को ईर्ष्या होने लगती है।

दरअसल, बालिकाएँ ध्यान देकर ईमानदारी से पढ़ती हैं।

सिद्धार्थ जैन : सुभाषजी, आपने बच्चों, समुदाय को शामिल करने की जो बातें बताईं, वे बड़ी दिलचस्प थीं। और ऐसी कौन-कौन सी बातें हैं, जो आपको लगातार ऊर्जा देती व प्रेरित करती हैं?

सुभाष यादव : बच्चे बहुत प्रेम देते हैं यहाँ। ऐसा प्रेम कभी-कभी घर वाले भी नहीं दे पाते। मैं भाव विह्वल हो जाता हूँ। जब भी गाँव में कोई बड़ी घटना हो जाए, मैं उनके दुःख-सुख में शामिल होकर पूरी उपस्थिति ज़रूर देता हूँ, और जब बाहर वाले यह देखते हैं तो उनको आश्चर्य भी होता है। मैं उन सभी से इतना जुड़ गया हूँ मानो हम एक ही परिवार के हों।

सिद्धार्थ जैन : ये सबकुछ आप जो कर रहे हैं, इसमें कई सारी चुनौतियाँ भी सामने आती होंगी। आप कैसे इन चुनौतियों का सामना करते हुए अपने काम को आगे बढ़ाते हैं?

सुभाष यादव : चुनौतियाँ तो बहुत आईं। कभी-कभी तो ऐसी भी स्थितियाँ आईं कि रुलाई फूट गई। पर मैं कभी डरा नहीं। मुझे भय नहीं लगता। कभी-कभी ऐसी स्थिति बनती है कि अधिकारियों से भी मुझे अपमानित होना पड़ता है, कभी बच्चों के अभिभावक भी नाराज़ हो जाते हैं, अपशब्द भी बोलते हैं, लेकिन मैंने कभी उनका अपमान नहीं किया। हालाँकि बाद में वही अभिभावक माफ़ी भी माँग लेते हैं।

अधिकारी कहते हैं कि आप तो अपनी मर्ज़ी से चल रहे हैं, जबकि हमारे नियम ऐसे नहीं हैं। मैं कहता हूँ कि बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ रही है और यही हमारा मक़सद होना चाहिए। मीटिंगों में हमारे संकुल के आसपास के अन्य टीचर्स भी नाराज़ होते हैं। कई तरह की बातें उठाते हैं, तो बुरा लगता है। परिवार वाले भी नाराज़ होते हैं कि दिनभर तो आप स्कूल में लगे रहते हैं और घर आकर कम्प्यूटर पर बैठ जाते हैं। पर मैं विचलित नहीं होता।

बचपन में शहीद होने का जो भाव मेरे मन में आया था उसके लिए यह ज़रूरी नहीं है कि हम फ़ौज में रहकर, बॉर्डर पर लड़कर ही शहीद हो सकते हैं। आप जो भी काम कर रहे हैं उसी में इतने मगन हो जाएँ, डूब जाएँ कि लोग उस काम के लिए आपको महत्त्व और ज़्यादा इज़्ज़त दें। वैसे शिक्षा कर्म में चुनौतियाँ तो बहुत आती हैं, पर मैं घबराता नहीं, न ही कभी घबराऊँगा, और आने वाले समय में भी आगे बढ़ता जाऊँगा।

सिद्धार्थ : शुक्रिया सुभाषजी, *पाठशाला* हेतु अपने अनुभव साझा करने के लिए।

सभी चित्र : सुभाष यादव

सुभाष यादव, मध्य प्रदेश के धार ज़िले की शासकीय एकीकृत माध्यमिक शाला, कागदीपुरा विकासखण्ड नालछा में 2012 से पढ़ा रहे हैं। आप लम्बे समय से आदिवासी बच्चों के बीच बेहतर काम करने का प्रयास कर रहे हैं। विद्यालयीन गतिविधियों में उत्कृष्ट कार्य के लिए जाने जाते हैं। प्राथमिक कक्षाओं में भाषा व गणित शिक्षण को बाल केन्द्रित और आकर्षक बनाने के लिए सतत प्रयासरत हैं। आपकी बच्चों के साथ बातचीत करने और उन्हें समझने में गहरी रुचि है।

सम्पर्क : subhashyadavnalchha@gmail.com

सिद्धार्थ कुमार जैन विगत तीन दशक से सामाजिक एवं अनौपचारिक / औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में सतत सक्रिय हैं। समाज कार्य, जनसंचार एवं भाषा अध्ययन की पढ़ाई की है। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल (मध्यप्रदेश) में सन् 2013 से कार्यरत हैं। इससे पहले आप दो दशक तक राज्य शिक्षा केन्द्र, मध्य प्रदेश एवं जन शिक्षण संस्थान, उज्जैन से जुड़े रहे। साहित्य निर्माण, शिक्षण प्रशिक्षण सामग्री निर्माण, व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान रहा है। नियमित तौर पर शिक्षा, पर्यावरण एवं सामाजिक पहलुओं पर देश के विभिन्न अख़बारों / पत्रिकाओं में लिखते रहते हैं।

सम्पर्क : siddharth.jain@azimpremjifoundation.org